

# मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

## कविता का सार

‘मधुर -मधुर मेरे दीपक जल’, शीषर्क की कविता छायावाद की प्रमुख कवयित्री ‘महादेवी वर्मा’ द्वारा रचित है। कवयित्री इस कविता के माध्यम से परमात्मा से मिलन की उत्कट इच्छा व्यक्त करती हैं। इस कविता में दीपक को आस्था के प्रतीक रूप में प्रयोग किया गया है। दीपक के प्रज्वलित होने के माध्यम से परमात्मा के मार्ग को आलोकित करने की बात कही गई है। कवयित्री अपने प्रियतम (परमात्मा) से एकाकार होना चाहती हैं। वह अपने तन के कण-कण को मोम की भाँति गलाना चाहती हैं। वह चाहती हैं कि अपने मन में स्थित आस्था रूपी दीपक से प्रभु-मिलन का मार्ग प्रकाशित हो जाए। वह नहीं चाहती कि विश्ववासी प्रभुभक्ति और प्रभुकृपा से वंचित रहें। वह प्रभु भक्ति की लौ में स्वयं को जलाने के लिए तत्पर हैं। वह प्रकृति के अनेक उदाहरण भी प्रस्तुत करती हैं। वह कहती हैं कि सागर का हृदय, आकाश के अनगिनत तारे तथा बादल में विद्यमान बिजली सभी प्राकृतिक उपादान भी नित्य प्रति जलते रहते हैं। समस्त विश्ववासी का हृदय भी ईश्या और घृणा की आग में जलता रहता है, किंतु कवयित्री उन्हें ईश्वर भक्ति का मार्ग दिखाना चाहती हैं ताकि सबका कल्याण हो।

## कविता की व्याख्या

1.

**मधुर मधुर मेरे दीपक जल!**

युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,

प्रियतम का पथ आलोकित कर!

सौरभ पैफला विपुल धूप बन,

मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तनऋ

दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,

तेरे जीवन का अणु गल गल!

**पुलक पुलक मेरे दीपक जल!**

**शब्दार्थ:** दीपक = आस्था रूपी दीपक, प्रतिक्षण = हर पल, प्रिय तम = सबसे अधिक प्रिय, परमात्माऋ ईश्वर, पथ = मार्ग, आलोकित = प्रकाशित, सारैभ = सगुंधं, विपलु = विशाल, बहुत बड़ा, मृदुल = कोमल, तन = शरीर, सिंधु = सागर, समुद्र अपरिमित=असीमित, जिसकी सीमा न हो, अपारऋ पुलक = रोमांच, खुशी।

**व्याख्या:** कवयित्री के मन में ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास है। इसी आस्था और विश्वास के सहारे वह अपने प्रियतम परमात्मा की भक्ति में लीन हो जाना चाहती हैं। महादेवी जी अपने हृदय अथवा अंतर्मन में स्थित आस्था रूपी दीपक को संबोधित करती हुई कहती हैं कि तू लगातार जलते रहो, हर पल, हर घड़ी, हर दिन, हर समय, युग-युगांतर तक जलते रहो, ताकि मेरे परमात्मा रूपी प्रियतम का पथ सदा तुम्हारे प्रकाश से जगमगाता रहे। भाव यह है कि मेरी आस्था कभी न टूटे, विश्वास रूपी दीप कभी न बुझे। ईश्वर भक्ति के लिए मेरा यह दीप सतत जलता रहे। अपने मन के बाद, कवयित्री अपने तन की ओर देखती हैं और कहती हैं कि ओ मेरा तन! तू बहुत विशाल धूप बन जा। जिस प्रकार धूप और अगरबत्ती स्वयं जल-जलकर समस्त विश्व को सुगंधित कर देते हैं, ठीक उसी प्रकार मेरा यह शरीर भी विशाल धूप बनकर निरंतर जले और समस्त संसार को अपने सत्कर्मों की सुगंध से भर दे। आगे कवयित्री अपने तन को कोमल मोम के समान बनकर निरंतर जलते हुए (यानी प्रभुभक्ति करते हुए) अपने अहंकार को गला दे, मिटा दे, पूर्णतः नष्ट कर दे। जिस प्रकार मोम लगातार जलते हुए पिघलकर अंततः समाप्त हो जाता है, ठीक उसी प्रकार अपने प्रियतम परमात्मा की आराधना करते हुए हमें अपने अहंकार को मिटा देना चाहिए। इस प्रकार तन रूपी मोम के जलने से और अहंकार के पिघलने से ऐसा प्रकाश का सागर फैले कि जिसमें जीवन का एक-एक अणु के समान तुच्छ अहंकार पिघलकर, गलकर समाप्त हो जाए। अरे मेरे विश्वास एवं आस्था रूपी दीपक! तू प्रसन्नतापूर्वक लगातार जलता रह। इस प्रकार कवयित्री संपूर्ण तन-मन से प्रभु-भक्ति में लीन हो जाना चाहती हैं।

### **काव्य-सौंदर्य:**

#### **भाव पक्ष:**

1. कवयित्री ईश्वर के प्रति आस्था रूपी दीपक को प्रज्वलित करना चाहती हैं।
2. कवयित्री परमात्मा को ही अपना प्रियतम मानती हैं और वह उनमें समाहित हो जाने की प्रार्थना कर रही हैं।

#### **कला पक्ष:**

1. तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया गया है तथा भाषा भावाभिव्यक्तिमें सफल है।
2. 'युग-युग' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
3. 'दीपक' में छद्म रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है। यह ईश्वर के प्रति अमित आस्था का प्रतीक भी है।

4. धूप और मोम में भी छद्म रूपक अलंकार है। तन रूपी धूप और मोम रूपी कोमल शरीर को कवयित्री लगातार प्रभुभक्ति में लगाना चाहती हैं।

2.

सारे शीतल कोमल नूतन,  
माँग रहे तुझसे ज्वाला-कण  
विश्व-शलभ सिर धुन कहता 'में  
हाय न जल पाया तुझ से मिल'  
सिहर सिहर मेरे दीपक जल!  
जलते नभ में देख असंख्यक,  
स्नेहहीन नित कितने दीपक  
जलमय सागर का उर जलता,  
विद्युत ले घिरता है बादल!  
विहँस विहँस मेरे दीपक जल!

**शब्दार्थ:** शीतल = ठंडे, नूतन = नए, ज्वाला-कण = आग के कण, विश्व = संसार, शलभ = पतंगा, सिहर = काँपना, असंख्यक = अनेक, स्नेहहीन = प्रेम रहित, नित = नित्य, उर = हृदय, विद्युत = बिजली।

**व्याख्या:** कवयित्री कह रही हैं कि आज संपूर्ण विश्व में ईश्वर या परमात्मा के प्रति आस्था का अभाव है। इसलिए सारे नए कोमल प्राण आज ईश्वर की आस्था की ज्योति (चिनगारी के कण) ढूँढ़ रहे हैं, किंतु कहीं भी न पाकर वे तुझसे (कवयित्री के विश्वास रूपी दीपक से) आस्था की चिनगारी माँग रहे हैं ताकि उनके हृदय में भी ईश्वर-भक्ति और ईश्वर के प्रति आस्था के दीपक प्रज्वलित हो जाएँ। यहाँ कवयित्री ने नूतन, शीतल उन प्राणियों को कहा है, जिनके मन में ईश्वर-भक्ति का कोई अनुभव नहीं है और प्रभु की आस्था की चिनगारी नहीं है। अतः वे सब अनुभव हीन शीतल लोग कवयित्री की असीमित आस्था रूपी दीपक की लौ से एक चिनगारी लेकर अपने आपको प्रभुभक्ति में लगा देना चाहते हैं। आगे कवयित्री कहती हैं यह जग रूपी पतंगा पश्चात्ताप करता हुआ कहता है कि हाय! यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं इस प्रेम-भक्ति की लौ में जलकर अपने अहंकार को न मिटा सका। जब तक जीव का अहंकार नहीं मिटता, तब तक परमात्मा के साथ जीवात्मा का मिलन नहीं होता। अतः जग रूपी पतंगे को आत्माहृति देने के लिए कवयित्री अपने आस्था रूपी दीपक को सिहर-सिहर कर जलने के लिए कहती हैं। विश्व-कल्याण की भावना भी इन पंक्तियों में झलकती है। आकाश में अनगिनत तारों को देखकर

कवयित्री को ऐसा लगता है कि वे सब स्नेहरहित हैं। अपार जलराशि से पूर्ण सागर का जल जब गर्म हो जाता है, तब भाप बनकर वह बादल में परिवर्तित हो जाता है और कड़कती बिजली के साथ आकाश में घनघोर घटा के रूप में दिखाई पड़ता है। 'जलमय सागर का उर जलना' का तात्पर्य संक्षेप में यही है। लोग आज सांसारिक ऐश्वर्य एवं वैभव से परिपूर्ण होकर भी अशांत हैं, उनका हृदय ईश्या और घृणा की आग से निरंतर जलता रहता है। किसी को भी सुख-शांति नहीं मिलती। ऐसी स्थिति में कवयित्री अपने हृदय में स्थित आस्था रूपी दीपक को हँसते-हँसते लगातार जलते रहने के लिए आग्रह करती हैं, ताकि प्रभु का पथ आलोकित हो और समस्त जगवासी प्रभु के पथ पर चल पड़ें।

### **काव्य-सौंदर्य:**

#### **भाव पक्ष:**

1. कवयित्री आस्था रूपी दीपक को निरंतर जलते रहने के लिए कह रही हैं।
2. कवयित्री ने प्रकृति के अनेक उदाहरणों, जैसे शलभ, विद्युत, बादल आदि का प्रयोग किया है।
3. काव्यांश में आध्यात्मिकता की छाया है।
4. आत्मा-परमात्मा के मिलने से परम शांति की अनुभूति कराने की चेष्टा की गई है।

#### **कला पक्ष:**

1. तत्सम भाषा का प्रयोग किया गया है एवं भाषा भावनानुकूल तथा प्रभावोत्पादक है।
2. 'विश्व-शलभ' में रूपक अलंकार है।
3. 'सिहर-सिहर' और 'विहँस-विहँस' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
4. प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

### **प्रमुख कार्य**

काव्य कृतियाँ – बारहमासा, नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, प्रथम आयाम, अग्नि रेखा, यामा।

गद्य रचनाएं – अतीत के चलचित्र, श्रृंखला की कड़ियाँ, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार और चिंतन के क्षण।

पुरस्कार – पद्मभूषण, ज्ञानपीठ सहित अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कार।

### **कठिन शब्दों के अर्थ**

- प्रियतम – सबसे अधिक प्रिय, परमात्मा
- आलोकित – प्रकाशित
- सौरभ – सुगंध
- विपुल – विशाल
- मृदुल – कोमल
- सिंधु – सागर
- अपरिमित – असीमित
- पुलक – रोमांच
- नूतन – नए
- ज्वाला-कण – आग के कण
- शलभ – पतंगा
- सिहर – कांपना
- असंख्यक – अनेक
- स्नेहहीन – प्रेम रहित
- नित – नित्य
- उर – हृदय
- विद्युत – बिजली

### प्रश्न अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. प्रस्तुत कविता में 'दीपक' और 'प्रियतम' किसके प्रतीक हैं?

उत्तर प्रस्तुत कविता में दीपक ईश्वर के प्रति आस्था एवं आत्मा का और प्रियतम उसके आराध्य ईश्वर का प्रतीक है।

2. दीपक से किस बात का आग्रह किया जा रहा है और क्यों?

उत्तर महादेवी वर्मा ने दीपक से यह आग्रह किया है कि वह निरंतर जलता रहे। अर्थात् इसकी आस्था बनी रहे। वह आग्रह इसलिए करती हैं क्योंकि वे अपने जीवन में ईश्वर का स्थान सबसे बड़ा मानती हैं। ईश्वर को पाना ही उनका लक्ष्य है।

### 3. विश्व-शलभ दीपक के साथ क्यों जल जाना चाहता है?

**उत्तर** विश्व-शलभ दीपक के साथ जलकर अपने अस्तित्व को विलीन करके प्रकाशमय होना चाहता है। जिस प्रकार दीपक ने स्वयं को जलाकर, संसार को ज्वाला के कण दिए हैं, उसी प्रकार विश्व-शलभ भी जनहित के लिए करना चाहता है।

### 4. आपकी दृष्टि में मधुर मधुर मेरे दीपक जल कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर है

(क) शब्दों की आवृत्ति पर।

(ख) सफल बिंब अंकन पर।

**उत्तर** इस कविता की सुंदरता दोनों पर निर्भर है। पुनरुक्ति रूप में शब्द का प्रयोग है – मधुर-मधुर, युग-युग, सिहर-सिहर, विहँस-विहँस आदि कविता को लयबद्ध बनाते हुए प्रभावी बनाने में सक्षम हैं। दूसरी ओर बिंब योजना भी सफल है। विश्व-शलभ सिर धुन कहता, मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन जैसे बिंब हैं।

### 5. कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाह रही हैं?

**उत्तर** कवयित्री अपने प्रियतम का पथ आलोकित करना चाहती हैं। उनका प्रियतम ईश्वर है।

### 6. कवयित्री को आकाश के तारे स्नेहहीन से क्यों प्रतीत हो रहे हैं?

**उत्तर** कवयित्री को आकाश के तारे स्नेहहीन से प्रतीत हो रहे हैं क्योंकि इनका तेज समाप्त हो चुका है। उनमें आपस में कोई स्नेह नहीं है।

### 7. पतंगा अपने क्षोभ को किस प्रकार व्यक्त कर रहा है?

**उत्तर** पतंगा अपना सिर धुनकर अपने क्षोभ को व्यक्त कर रहा है। वह सोच रहा है कि वह इस आस्था रूपी दीपक की लौ के साथ जलकर उस ईश्वर में विलीन क्यों नहीं हो गया।

### 8. कवयित्री ने दीपक को हर बार अलग-अलग तरह से 'मधुर-मधुर, पुलक-पुलक, सिहर-सिहर और विहँस-विहँस' जलने को क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर** कवयित्री अपने आत्मदीपक को तरह-तरह से जलने के लिए कहती हैं मीठी, प्रेममयी, खुशी के साथ, काँपते हुए, उत्साह और प्रसन्नता से। कवयित्री चाहती

है कि हर परिस्थितियों में यह दीपक जलता रहे और प्रभु का पथ आलोकित करता रहे। इसलिए कवयित्री ने दीपक को हर बार अलग-अलग तरह से जलने को कहा है।

### 9. नीचे दी गई काव्य-पंक्तियों को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

जलते नभ में देख असंख्यक,  
स्नेहहीन नित कितने दीपक;  
जलमय सागर का उर जलता,  
विद्युत ले घिरता है बादल!  
विहँस विहँस मेरे दीपक जल!

(क) स्नेहहीन दीपक से क्या तात्पर्य है?

(ख) सागर को जलमय कहने का क्या अभिप्राय है और उसका हृदय क्यों जलता है?

(ग) बादलों की क्या विशेषता बताई गई है?

(घ) कवयित्री दीपक को विहँस विहँस जलने के लिए क्यों कह रही हैं?

उत्तर (क) स्नेहहीन दीपक से तात्पर्य बिना तेल का दीपक अर्थात् प्रभु भक्ति से शून्य व्यक्ति।

(ख) कवयित्री ने सागर को संसार कहा है और जलमय का अर्थ है सांसारिकता में लिप्त। अतः सागर को जलमय कहने से तात्पर्य है सांसारिकता से भरपूर संसार। सागर में अथाह पानी है परन्तु किसी के उपयोग में नहीं आता। इसी तरह बिना ईश्वर भक्ति के व्यक्ति बेकार है। बादल में परोपकार की भावना होती है। वे वर्षा करके संसार को हराभरा बनाते हैं तथा बिजली की चमक से संसार को आलोकित करते हैं, जिसे देखकर सागर का हृदय जलता है।

(ग) बादलों में जल भरा रहता है और वे वर्षा करके संसार को हराभरा बनाते हैं। बिजली की चमक से संसार को आलोकित करते हैं। इस प्रकार वह परोपकारी स्वभाव का होता है।

(घ) कवयित्री दीपक को उत्साह से तथा प्रसन्नता से जलने के लिए कहती हैं क्योंकि वे अपने आस्था रूपी दीपक की लौ से सभी के मन में आस्था जगाना चाहती हैं।

**10. क्या मीराबाई और आधुनिक मीरा महादेवी वर्मा इन दोनों ने अपने-अपने आराध्य देव से मिलने के लिए जो युक्तियाँ अपनाई हैं, उनमें आपको कुछ समानता या अंतर प्रतीत होता है? अपने विचार प्रकट कीजिए?**

**उत्तर** महादेवी वर्मा ने ईश्वर को निराकार ब्रह्म माना है। वे उसे प्रियतम मानती हैं। सर्वस्व समर्पण की चाह भी की है लेकिन उसके स्वरूप की चर्चा नहीं की। मीराबाई श्री कृष्ण को आराध्य, प्रियतम मानती हैं और उनकी सेविका बनकर रहना चाहती हैं। उनके स्वरूप और सौंदर्य की रचना भी की है। दोनों में केवल यही अंतर है कि महादेवी अपने आराध्य को निर्गुण मानती हैं और मीरा उनकी सगुण उपासक हैं।

**(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए –**

**1. दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,  
तेरे जीवन का अणु गल गल!**

**उत्तर** कवयित्री का मानना है कि मेरे आस्था के दीपक तू जल-जलकर अपने जीवन के एक-एक कण को गला दे और उस प्रकाश को सागर की भाँति विस्तृत रूप में फैला दे ताकि दूसरे लोग भी उसका लाभ उठा सकें।

**2. युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,  
प्रियतम का पथ आलोकित कर!**

**उत्तर** इन पंक्तियों में कवयित्री का यह भाव है कि आस्था रूपी दीपक हमेशा जलता रहे। युगों-युगों तक प्रकाश फैलाता रहे। प्रियतम रूपी ईश्वर का मार्ग प्रकाशित करता रहे अर्थात् ईश्वर में आस्था बनी रहे।

**3. मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन!**

**उत्तर** इस पंक्ति में कवयित्री का मानना है कि इस कोमल तन को मोम की भाँति घुलना होगा तभी तो प्रियतम तक पहुँचना संभव हो पाएगा। अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति के लिए कठिन साधना की आवश्यकता है।